International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 24-25

भवानी प्रसाद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सुधा कुमारी
शोधात्री (हिंदी), हिमालयन विश्वविधालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

श्री भवानी प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य के एक जागरूक तथा सशक्त अभिव्यक्ति के द्वारा यथार्थ को अपनी कविताओं के द्वारा प्रस्तुत करने वाले कवि है उन्होने अपने समकालिनो से अलग तार सत्तक के दुसरे प्रकाशन में स्थान प्राप्त किया अलग इसलिए की वे एक प्रवाह में कविताये नही लिखी उन्होने त्रिकाल संध्या में आजादी का जश्न मनाया है तो ''बुनि हुई रस्सी'' में समाज के आम इन्सान को प्रस्तुत किया है।

गॉधी पंचशती में गांधी को यथार्थ और आदर्श के साथ उजागर किया तो शरीर कविता और फसले में प्रकृति को महत्व दिया है। साथ ही साथ यथार्थ और आदर्श दो पहियों के समान तथा साथ चलते रहे है। इन सब बातो के द्वारा मिश्रजी ने हिन्दी कविता साहित्य को समृद्ध किया हैं

भवानी प्रसाद मिश्र का साहित्य यथार्थ और आदर्श के भाव बोध से परिपूर्ण है। सामान्य मानवी की आकांक्षाए और समाज में फैली बंदीओ को गांधी मार्ग पर चलकर कविता के माध्यम से आक्रोश और गहरी निगाहो से देखकर प्रस्तुत किया है।

मिश्रजी ने इसी वेदना में सवेंदना मिलाकर सम – समायिक जन जीवन की आपत्ति एवं अप्रत्याशित विसंगतियों तथा विकृतियो से जनित अनेक विध इन्द्र ग्रसित समस्याओ को अनावृत करने की बलवंती मांग को बडे साहस के साथ अपनी कविताओ के माध्यम से प्रस्तुत किया था।

हमारे आलोच्च कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्रजी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को उक्त तथ्य से भिन्न नहीं कहा जा सकता है क्योंकि समाज में प्रयोजन शुन्य नियम और व्यवस्थाए जहॉ एक और अन्तवृतियो का दमन तथा कुठा ग्रस्ता पैदा कर रही थी। वही दुसरी ओर अनेक अवांदनीय तत्वो को जन्म दे रही थी। परिणामतः हर तरफ क्रांति की आवाज तथा विद्रोह का स्वर मुखर होने लगा था साहित्य ने पुराने दाये को तोड मरोडकर अपनी अभिव्यक्ति के मार्ग बनाये और मधुर योजनाओ की सुन्दर भावनाओ की सुन्दर धारा प्रवाह मान हो उठी।

अतः यहॉ संक्षेपण में उनकी जीवन एवं व्यक्तित्व के उन पक्षों का विशेष रूप से अनुशीलन किया जा रहा है जो उनके रचना संसार भावभूमि तथा जीवनगत प्रेरणाओ एवं संस्वरो के लिए उत्तरदायी हैं।

श्री भवानी प्रसाद मिश्रा को अपने आत्मीय जनो के बीच 'भवानी भाई' के नाम से जाने जाते है। विन्धयाचल के नैमार्गिक आचॅल मे एक सामान्य दिखते हुये भी सम्पर्क में तथा काव्य गौविष्ठयो में सम्मिलित होने वाले को अपनी असमानता का अनुभव करा देते हैं।

मिश्राजी के बचपन का अधिकाश समय सोहागपुर हाशंगाबाद नरसिहपुर और जबलपुर में बीमा। उनके मझले दादु पं. राजाराम निःसन्तान थे और उनका भवानी प्रसाद मिश्र से बडा स्नेह था आरम्भ करान चाहते थे पिताजी ने उनके इस विचार से सहमत होकर उनके पास प्राइमरी पास करने के बाद भेज भी दिया किन्तू किसी कारण वंश वे कुछ महिने बाद ही वापस आ गये। उनको हाई स्कूल की शिक्षा 1930 के आस पास दाशंगाबाद और जबलपुर मे रहकर ही पुरी हुई थी। इसके बाद तो वे अपने पिताजी के पास ही आ गये थे। सन 1934 – 35 में इन्होने बी.ए. उतीर्ण की पारिवारिक जनो तथा निकटवर्ती दोस्तो आदि सभी की यही इच्छा थी की वे एम ए की परीक्षा भी उतीर्ण की।

भवानी प्रसाद मिश्र का सम्पूर्ण साहित्य देखने पर उपर्युक्त कथ्य की पुष्टि हो जाती है उनका समस्त काव्यात्मक और गधात्मक साहित्य जगत और जीवन से सम्बन्ध आस्था का साहित्य है और यह आस्था कवि को नित के संघर्षो से मिला है उनका साहित्य जीवन से प्रतिबद्धता का साहित्य है और वह प्रतिबद्धता है मानव मात्र के दुःख दर्द के प्रति एक प्रबुद्ध एवं संवेदनशील कवि की जो यह जानता और मानता है कि आज की भौतिकवादी दुनिया में तटस्थ होकर जीना या तो मुश्किल है।

ळमारे आलौक्ष्य कवि में गहरी प्रथा विष्णुता और असाधारण रचनात्मक क्षमता है। उन्होने बदलते हुये परिवेश के अनुरूप मुल्यो को समझा है उनकी कल्पना दृतासिनी और उदसिनी नही है।

बल्कि उनमें नवीन क्रान्ति के स्वर है उनका कृतित्व कुछ इस प्रकार से है भवानी प्रसाद मिश्र ने साहित्य की विविध विधाओ में सहजता के साथ सृर्जन यात्रा की है काव्य और गलत के साथ साथ निबंध और संस्करण आदि लिखकर उन्होने यह सिद्ध किया कि वे सर्वतो मुखी प्रतिभा के धनी हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार हिन्दी साहित्य इतिहास में वृहद भी है और महत्व भी अब तक उनके अठारह काव्य संग्रह एक खेड काव्य दो गध संकलन और बच्चो तथा पौधो के लिए कई रचनाए लिखी है।

गीत – फराश अंधरी कविता गांधी पंचशती बुनी हुई रस्सी कालजयो परिवर्तन लिये मान सरोवर दिन इस प्रकार मिश्राजी का साहित्य फलक बहुत विशाल है जो इन ग्रंथो में हमें महसूस होता है।

प्रस्तावना

भवानी प्रसाद मिश्र का सहित्य यथार्थ और आदर्श के भाव बोध से परिपूर्ण है सामान्य मिश्राजी को साहित्य कार के रूप में जितना न्याय मिलना चाहिए था उतना न्याय उन्हे आज तक मिल नही पाया है लेकिन इस बात का उन्हे कभी अफसोस नही रहा है उन्हे जितना विश्वास ईश्वर में था उतना ही गांधी पर भी था और उसी को ध्यान में रखकर उनके कार्यो को कविता के रूप प्रस्तुत करते रहे कि इस शो प्रबन्धक माध्यम से उसी अछुते से साहित्य की तरफ ध्यान देने का एक छोटा सा प्रयास किया।

शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक काव्य साहित्य लेखन परम्परा के लाभ जुडे श्री भवानी प्रसाद मिश्र के साहित्य पर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि वे साहित्य परम्परा से हटकर रचनाधर्मी प्रयोग करते है मिश्रजी ने अपनी कविताओ के माध्यम से समाज के बदलते हुये रूप को प्रस्तुत करने का सफल प्रयोग किया है। इस अध्ययन के दौरान मुझे कही के बन्दु अयायी व्यक्तित्व और साहित्य में संशोधन करने की पर्याप्त सम्भावनाये दिखाई दी।

प्रथम अध्यायः भवानी प्रसाद मिश्रा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस प्रथम अध्याय में मैने मिश्राजी की जीवनी तथा व्यक्तित्व के साथ उनके कृतित्व पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है जिसमें मिश्राजी का जन्म स्थान शिक्षा वैवाद्रिक जीवन परिवार संसार आदि अनेक पहलूओ का विस्तार वर्णन करके उनके कवित्व की विशेषताओ को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है इसके साथ मिश्रजी की साहित्य यात्रा का विस्तार से वर्णन किया है मिश्रजी के गद्य साहित्य का भी परिचय करवाया है साथ ही में उनके सभी काव्य ग्रन्थो की बात भी की है इस प्रथम अध्याय मे भवानी प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व और कृतित्व को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है।

दूसरा अध्यायः भवानी प्रसाद की काव्य एवं गद्य कृतियो का

परिचय :– दूसरे अध्याय में मैने भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य एवं गद्य कृतियो का अनशीलन प्रस्तुत किया है। इसके सामाजिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये कृतियो का प्रवृति मूलक विवेचन प्रस्तुत किया है। साथ ही तथ्य पर भी विचार किया गया है कि आधुनिक बोध के अनुरूप किस प्रकार पूर्ववर्ती काव्य धार से पृथक नवीन रूप से भाव योजना के क्षेत्र में योजना के क्षेत्र में आलोच्य कृतिकार को अभूत पूर्व सफलता प्राप्त हुई है इस में सभी कृतियो का परिचय प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्यायः भवानी प्रसाद मिश्र के काव्यो में सामाजिक चेतना साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी है वह सामाजिक विचारो तथा भावनाओ का सृष्टा और प्रेरक है इस अध्याय में चुगीन चेतना तथा काव्य सौन्दर्य यांत्रिक सभ्यता चेतना के महत्वपूर्ण पहलुओ को उजागर करने वाले मुदो को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है साथ ही अर्थ व्यवस्था परिवार प्रणाली शहरीकरण साम्प्रदायिकता आम आदमी की मानसिकता आदि पर भी विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है।

चौथा अध्यायः भवानी प्रसाद मिश्र के काव्यो में प्रति विबिंत वर्ग संघर्ष चतुर्थ अध्याय में मिश्राजी के साहित्य मे प्रति विबिंत वर्ग संघर्षया में पहले वैयातिक जीवन दर्शन तथा गांधीवाद के प्रभाव को प्रस्तत किया साथ ही राजनैतिक जीवन दृष्टि तथा स्थिति में राष्ट्रीय उद्बोधन भ्रष्टाचार निराशा कुंठा आजाद व्यक्ति के जीवन मूल्यो आदि पर विस्तृत रूप से चर्चा किये है। इन सभी पहलूओ के साथ इस अध्याय में मिश्राजी के काव्यो में जो वर्ग संघर्ष में मौजूद है उसे सब के सामने रखने का प्रयत्न किया है।

पाँचवा अध्यायः भवानी प्रसाद मिश्र के काव्यो में गांधीवाद मिश्रजी का गांधीवादी कवि रूप में पहचाना जाता है। इस अध्याय में मिश्राजी के काव्यों मोगाणी के ग्रहाव्रत और उनके गांधी प्रेम को लेखकर लिखी गई रचनाओं का प्रस्तुत किया गया है।

उनके काव्यो में सत्य अहिंसा व्रहाचार्य अपरिग्रह जात मेहनत आदि पर जो काव्य लिखे है उनको प्रस्तुत किया गया है मिश्रजी गांधी युग जिया पिया तथा उगला है मिश्रजी को गांधी का उत्साव कहा है कवि अनेक वर्षो तक महिला आश्रम वर्धा में अध्यापन कार्य करते रहे सेवा ग्राम उनकी सांसो में बसा था उन सभी बातो को यहा प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय में गांधीवाद को ध्यान में रखकर मिश्रजी ने लिखी हुई कविताओ में सिद्धान्त फर्क कविताये और व्यक्ति फर्क कविताये इन दोनो प्रकार के काव्यो पर प्रकाश डाला गया है।

छठा अध्यायः भवानी प्रसाद मिश्राजी के काव्यों का शिल्प सौन्दर्य काव्य स्वरूप में प्रायः दो पक्ष होते है भाव का विचार पक्ष तथा शिल्प का कला।

प्रथम पक्ष का संबंध काव्य के भीतरी आत्म पक्ष से होने के कारण उसे अन्तरंग तथा द्वितीय पक्ष का सम्बन्ध उसकी रूप रचना आदि से होने के कारण उसे बर्हिरंग भी कहा गया है। इस अध्याय में काव्य भाषा शैली उपमान विधान विम्ब प्रतीक प्रतीव योजना गीत एवं नाद सौन्दर्य प्रबन्ध आदि पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भवानी प्रसाद मिश्र, अंधेरी कविताये, भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली –6
2. भवानी प्रसाद मिश्र बुनी हुई रस्सी, सरला प्रकाशन नीवन शाहदरा दिल्ली –990032
3. सिंह विजय बहादुर,भवानी प्रसाद मिश्र, परिचय एवं प्रतिनिधि, विताये राज्यपाल एण्ड सन्स कश्मीर गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
4. अज्ञेय सम्पादक दूसरा सत्तक भरतीय ज्ञान पीठ, प्रकाशन अलीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता 27
5. कश्यप मिथलेश, भवानी प्रसाद मिश्र के काव्यो में सामाजिक चेतना, 3611/5 नारंग कालोनी श्रीनगर दिल्ली 110035
6. विजय कुमार, भवानी प्रसाद मिश्र व्यक्ति और कविता क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली
7. भवानी प्रसाद मिश्र, सम्प्रति, किताब घर प्रकाशन मेन रोड गांधी नगर, दिल्ली.
8. भवानी प्रसाद मिश्र, परिवर्तन जिए, सरला प्रकाशन नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032
9. भवानी प्रसाद मिश्र, व्यक्ति है दुःखी, अभिव्यक्ति प्रकाशन युनिवर्सिटी, रोड इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1967
10. भवानी प्रसाद मिश्र, गीत फरोश, नव हिन्दी प्रककाशन, 831 बेगम, बाजार हैदराबाद प्रथम संस्करण, 1956
11. भवानी प्रसाद मिश्र, त्रिकाल संध्या, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली प्रथम संस्करण 1978
12. भवानी प्रसाद मिश्र, गांधी पंचशती, सरला प्रकाशन 2715 नेताजी नगर, नई दिल्ली 23
13. भवानी प्रसाद मिश्र, तुस की आग, हिमाचल पुस्तक भण्डार 116133, महावीर चौक गांधी नगर दिल्ली
14. .भवानी प्रसाद मिश्र, इन्द्र न मम, सरला प्रकाशन के 17 नवीन शाहदरा